सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

जन्म : 1897 (बसंत पंचमी) ।
निधन : 15 अक्टूबर 1961 ।
जन्म-स्थान : महिषादल, बंगाल ।
मूल निवास : ग्राम - गढ़ाकोला, जिला-उन्नाव, उत्तर प्रदेश ।
पिता : पं. रामसहाय त्रिपाठी
शिक्षा : बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी में प्रारंभिक शिक्षा । औपचारिक शिक्षा स्वच्छंद स्वभाव के कारण स्कूल तक ही । पुनः स्वाध्याय से विद्यार्जन ।
विशेष अभिरुचि: संगीत तथा कुश्ती लड़ने में ।
व्यक्तित्व : भव्य, गौर, कसरती शरीर । स्वाभिमान एवं आत्मगौरव से परिपूर्ण । तेज और ओज से प्रदीप्त व्यक्तित्व ।
पारिवारिक जीवन: 14 वर्ष की वय में मनोहरा देवी से विवाह । 'रामचरितमानस' का नियमित पाठ करनेवाली पत्नी की प्रेरणा से निराला की तुलसीदास की कृतियों में गहरी रुचि और तुलसीदास के काव्यों द्वारा ही हिंदी भाषा-साहित्य में अनुराग । शीघ्र ही दो संततियों- रामकृष्ण त्रिपाठी और सरोज को छोड़कर पत्नी का निधन । 18 वर्ष की वय में पुत्री सरोज का निधन । पारिवारिक जीवन विपदाओं से घिरा रहा ।
पत्रकारिता : समन्वय (रामकृष्ण मिशन की पत्रिका), मतवाला, माधुरी, सुधा, जागरण से गहरी संबद्धता ।
पहली कविता : 'जुही की कली' (1916) ।
कृतियाँ : काव्य - अनामिका (पहला कविता संग्रह), परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नए पत्ते, आराधना, अर्चना, गीतगुंज, सांध्यकाकली और अपरा (चुनी हुई कविताएँ) ।

गद्य - लिली, सुकुल की बीवी, निरुपमा, अप्सरा, अलका, चतुरी चमार, चोटी की पकड़, कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा (कथा साहित्य एवं रेखाचित्र) । चयन, प्रबंध प्रतिभा, प्रबंध पद्म, पंत और पल्लव, संग्रह, रवींद्र कविताकानन (निबंध एवं आलोचना) बच्चों के लिए अनेक जीवनियाँ ।

अनुवाद - शरत्चंद्र, रवींद्रनाथ, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद आदि की रचनाओं के अनुवाद जिनकी संख्या 61 है ।

'निराला रचनावली' राजकमल प्रकाशन दिल्ली से आठ खंडों में प्रकाशित ।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी कविता के ऐतिहासितक विक़ास में संभवत: गोस्वामी तुलसीदास

के बाद की सबसे बड़ी विभूति हैं । उन्होंने हिंदी कविता को अपनी अशेष अपराजेय प्राणशक्ति से सींचा । उस महाप्राण कवि की अप्रतिहत जीवनीशक्ति पाकर वह शत-सहस्त्र अंकुरों में पल्लवित होकर अनेक पथों पर फैल चली । नए युग में हिंदी कविता को निरे पद्य के दुर्गम दुर्ग से उबारकर अरुद्ध प्रकाश, वायु, जल और आकाश वाले प्रशस्त क्षेत्र में लानेवाले कवियों में निराला निर्विवाद रूप से प्रमुख हैं । तुलसीदास की तरह ही उनके पास कविता के बहु-विपुल स्रोत थे, अनुभव का अछीज खजाना था, शब्दार्थ-प्रतिपत्ति की अपरिमित भूमि और भंगिमाएँ थीं । निराला का भाषा, भाव और अभिव्यक्ति कला पर ही असाधारण अधिकार नहीं था; प्रकृति और समाज का गहन पर्यवेक्षण, व्यापक मानवीय करुणा तथा संवेदना और सहानुभूति की मर्म-संपदा भी उनके कोष में असाधारण थी । जीवन और सृजन के दोनों धरातलों पर आजीवन दुर्दम संघर्ष करते हुए अपराजित जिजीविषा के इस कवि ने दोनों हाथों से अनवरत आत्मदान किया, अपनी मर्म-संपदा लुटाई ।

महाप्राण निराला एक विद्रोही और क्रांतिकारी कवि थे, जिसके भाव-विचारों के केंद्र में रूढ़ियों की मार झेलता तथा शोषण और दमन पर पलती व्यवस्था के अन्याय और वंचनापूर्ण व्यूहों में पिसता हुआ मनुष्य था । उसके हितों की रक्षा के लिए निराला अपनी रचनाओं में एक मोर्चेबंदी-सी करते दिखाई पड़ते हैं । विद्रोह और क्रांति की चेतना उनके जीवन और काव्य में एक समान है । जीवन और काव्य, भीतर और बाहर, उनके यहाँ एक और अखंड हैं । जो काव्य में है वह उनके जीवन से प्रमाणित है और जो जीवन में दिखाई पड़ता है उसकी ऊर्जा उनके सर्जनात्मक संकल्प एवं पिपासा से ही जन्म लेती है । इस तरह जीवन और काव्य दोनों बिंब-प्रतिबिंब दिखाई पड़ते हैं और एक-दूसरे को प्रमाणित करते हैं । उन्होंने जो लिखा, कविता हो या गद्य, उसकी कीमत अपनी जिंदगी से चुकाई ।

निराला ने कविता को छंद के बंधन से मुक्ति दिलाई, ऐसी प्रसिद्धि है; किंतु उन्होंने काव्य भाषा, काव्य विषय और रूप आदि के क्षेत्रों में भी कविता को अनेक रूढ़ियों से आजाद किया तथा उसे नए जीवन स्रोतों से जोड़कर नए भावपथों पर अग्रसर किया । निराला ने कविता में आपाततः कायिक, वाचिक और मानसिक ऐसे परिवर्तन किए और उसके भीतर नया अवकाश, नई कामनाएँ, अभीप्साएँ और संकल्प सिरजे । इस तरह हिंदी कविता प्रौढ़तर अवस्थाओं में पहुँचकर प्रायः वैश्विक समांतरता अर्जित कर सकी । निश्चय ही हिंदी कविता की प्रकृति, संरचना और चरित्र में आए इन उछालों के पीछे महाप्राण निराला के साथ उनके अन्य सहयोगियों की भी भूमिका थी, किंतु निराला की ऊर्जस्वी अभिप्रेरणा प्रमुख और निर्णायक थी । उन्होंने हिंदी कविता को अपरोक्ष पारिस्थितिक संवाद की स्थिति में पहुँचाया तथा उसके ऋतुचक्र एवं जलवायु में हो रहे परिवर्तनों को समुचित रचनात्मक दिशा दी । आगे के प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि काव्यांदोलनों द्वारा हुए काव्य विकास को दृष्टिपथ में रखकर इन मान्यताओं की औचित्य परीक्षा सहज की जा सकती है ।

निराला ने अपनी रचना प्रक्रिया में अनेक तरह के काव्य रूप अपनाए, परंपरित काव्यरूपों में नई रूपात्मक उद्‌भावनाएँ कीं । उन्होंने गीत, प्रगीत, लंबी प्रबंधात्मक कविताएँ अनेक प्रभेदों के साथ लिखीं । यहाँ उनकी प्रसिद्ध प्रगीतात्मक रचना 'तोड़ती पत्थर' प्रस्तुत है । प्रगीत में चिलचिलाती दोपहरी में सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती एक युवा मजदूरिन का क्रांतिकारी आशयों और संकेतों से भरा वस्तुपरक यथार्थवादी अंकन है । रेखाचित्र के विषयनिष्ठ वस्तुपरक धरातल से सहजगति में उठकर यह कविता एक गौरवपूर्ण संश्लिष्ट झंकृति छोड़ जाती है, जिसमें पाठक या श्रोता तटस्थ नहीं रह पाता ।

♦ ♦ ♦

तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर -
वह तोड़ती पत्थर
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार:-
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार ।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई-ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्राय: हुई दुपहर :-
वह तोड़ती पत्थर ।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,

सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार;
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
'मैं तोड़ती पत्थर ।'

अभ्यास

कविता के साथ

1. पत्थर तोड़ने वाली स्त्री का परिचय कवि ने किस तरह दिया है ?
2. 'श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन'
निराला ने पत्थर तोड़ने वाली स्त्री का ऐसा अंकन क्यों किया है ? आपके विचार से ऐसा लिखने की क्या सार्थकता है ?
3. स्त्री अपने गुरु हथौड़े से किस पर प्रहार कर रही है ?
4. कवि को अपनी ओर देखते हुए देखकर स्त्री सामने खड़े भवन की ओर देखने लगती है । ऐसा क्यों ?
5. 'छिन्नतार' का क्या अर्थ है ? कविता के संदर्भ में स्पष्ट करें ।
6. 'देखकर कोई नहीं
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,'
–इन पंक्तियों का मर्म उद्घाटित करें ।
7. 'सजा सहज सितार
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार'
-यहाँ किस सितार की ओर संकेत है ? इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें ।
8. एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों, कहा-
'मैं तोड़ती पत्थर ।'
-इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें ।
9. कविता की अंतिम पंक्ति है - 'मैं तोड़ती पत्थर ।' इससे पूर्व तीन बार 'वह तोड़ती पत्थर' का प्रयोग हुआ है । इस अंतिम पंक्ति का वैशिष्ट्य स्पष्ट करें ।
10. कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें ।

कविता के आस-पास

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को 'दीनबंधु' एवं 'महाप्राण' जैसे विशेषणों से विभूषित किया गया है । निराला अत्यंत उदारमना थे । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक निबंध लिखें ।
2. 'वसंत पंचमी' निराला का जन्म दिवस है । अपने विद्यालय में उस दिन महाप्राण के जन्म दिवस पर काव्य गोष्ठी आयोजित करें । इसमें उनकी कविताओं का पाठ करें ।
3. निराला आधुनिक हिंदी कविता में यथार्थवादी भावधारा के प्रणेता हैं । इस विषय पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
4. निराला की अत्यंत चर्चित यथार्थवादी कविताएँ - विधवा, भिक्षुक, रानी और कानी, कुकुरमुत्ता आदि । इनका संग्रह करें और इन पर अपने मित्रों एवं शिक्षक से चर्चा करें ।
5. स्त्री किसी छायादार पेड़ के नीचे नहीं है । वह झुलसाने वाली लू और तमतमाते हुए दिन में पत्थर तोड़ रही है । उसके मन में क्या भाव उठते होंगे ? कल्पना से अपने शब्दों में लिखें ।
6. स्त्री पत्थर तोड़ती है । क्या वह पत्थर के साथ-साथ किसी अन्य वस्तु पर भी प्रहार कर रही है, इस विषय में आपका क्या विचार है ?
7. निराला क्रांतिकारी कवि हैं । उन्होंने यह क्रांति विषय और भाव के स्तर पर ही नहीं, भाषा और छंद के स्तर पर भी की है । इस विषय में अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
8. निराला ने छंद को बंधन माना है । अगर यह कविता छंद में लिखी गई होती तो आपकी समझ में इसका क्या स्वरूप होता और कैसा प्रभाव पड़ता ?
9. निराला ने अपनी पुत्री के असामयिक निधन पर एक शोक-गीति की रचना की है । इसे उपलब्ध करें और उसका पाठ करें https://www.evidyarthi.in/
10. निराला ने स्वाधीनता आंदोलन और सामाजिक उत्थान से संबंधित अनेक कविताएँ लिखी हैं । ऐसी कविताओं का संग्रह कर उनका पाठ करें ।
11. निराला की प्रसिद्ध कविता 'राम की शक्ति-पूजा' का प्रारंभिक अंश यहाँ दिया जा रहा है । आप इस कविता का शुद्ध-शुद्ध लयबद्ध वाचन करें –

रवि हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का तीक्ष्ण-शर-विधृत-क्षिप्र-कर, वेग-प्रखर
शतशेल सम्वरणशील, नील नभ-गर्जित-स्वर,
प्रतिपल परिवर्तित व्यूह–भेद-कौशल-समूह–
राक्षस-विरुद्ध-प्रत्यूह, –क्रुद्ध-कपि-विषम-हूह,
विच्छुरित-वह्नि-राजीवनयन-हत-लक्ष्य-बाण,
लोहित लोचन रावण मदमोचन-महीयान,
राघव-लाघव–रावण-वारण-गत-युग्म प्रहर,
उद्धत-लंकापति-मर्दित-कपि-दल-बल-विस्तर,
अनिमेष राम–विश्वजिद्दिव्य-शर-भंग-भाव,–

विद्धांग–बद्ध-कोदण्ड मुष्टि–खर-रुधिर-स्राव,
रावण-प्रहार-दुर्वार विकल-वानर-दल-बल,–
मूर्च्छित-सुग्रीवांगद-भीषण गवाक्ष-गंय-नल,–
वारित-सौमित्र-भल्लपति–अगणित-मल्ल-रोध,–
गर्जित-प्रलयाब्धि-क्षुब्ध-हनुमत्-केवल-प्रबोध,
उदगीरित-वह्नि-भीम-पर्वत-कपि-चतु:प्रहर,–
जानकी-भीरु-उर-आशा-भर,–रावण सम्वर ।
लौटे युग दल । राक्षस-पद-तल पृथ्वी टलमल,
बिंध महोल्लास से बार-बार आकाश विकल ।
वानर-वाहिनी खिन्न, लख निज-पति-चरण-चिह्न
चल रही शिविर की ओर स्थविर-दल ज्यों विभिन्न ।
प्रशमित है वातावरण, नमित-मुख सान्ध्य कमल
लक्ष्मण चिन्ता-पल, पीछे वानर-वीर सकल;
रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुणं है, कटि-बन्ध स्रस्त–तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार;
चमकती दूर ताराएँ ज्यों हों कहीं पार ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   पथ, पेड़, दिवा, भू, पत्थर, गर्द, सुघर
2. 'देखा मुझे उस दृष्टि से' – यहाँ 'दृष्टि' संज्ञा है या विशेषण ?
3. निम्नलिखित शब्दों से विशेष्य-विशेषण अलग करें –
   श्याम तन, नत नयन, गुरु हथौड़ा, सहज सितार
4. कविता से सर्वनाम पदों को चुनकर लिखें ।
5. 'एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर' – यहाँ 'सुघर' क्या है ?
6. कविता से अनुप्रास, रूपक और उपमा अलंकारों के उदाहरण चुन कर लिखें ।
7. यह कविता एक प्रगीत है । गीत और प्रगीत में क्या अंतर है । यह अपने शिक्षक से मालूम करें ।

शब्द निधि

पथ : रास्ता
श्याम तन : साँवला शरीर
नत नयन : झुकी आँखें

कर्म-रत-मन	:	काम में लीन मन
गुरु	:	बड़ा
तरु मालिका	:	पेड़ों की पंक्ति
अट्टालिका	:	ऊँचा बहुमंजिला भवन
प्राकार	:	चहारदीवारी, परकोटा
दिवा	:	दिन
भू	:	धरती
गर्द	:	धूल
चिनगी	:	चिनगारी
सुघर	:	सुगठित
सीकर	:	पसीना
छिन्नतार	:	टूटी निरंतरता